॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री कुंजबिहारी जी की आरती

परंपरागत (ब्रज की आरती)

आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

गले में बैजंती माला, बजावै मुरली मधुर बाला।
श्रवण में कुंडल झलकाला, नंद के आनंद नंदलाला।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली।
लतन में ठाढ़े बनमाली,
भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी तिलक, चंद्र-सी झलक,
ललित छवि श्यामा प्यारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारी की ॥

कनकमय मोर मुकुट बिलसै, देवता दरसन को तरसैं।
गगन सों सुमन रासि बरसै,
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिन संग,
अतुल रति गोप कुमारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारी की ॥

जहाँ ते प्रकट भई गंगा, सकल मन हारिणि श्रीगंगा।
स्मरन ते होत मोह भंगा,
बसी सिव सीस, जटा के बीच, हरै अघ कीच,
चरन छवि श्रीबनवारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारी की ॥

चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृंदावन बेनू।
चहुँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मंद, चाँदनी चंद, कटत भव फंद,
टेर सुन दीन दुखारी की॥

॥ आरती कुंजबिहारी की ॥

॥ बोलो श्री कृष्ण की जय ॥